Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, MAR–APR, 2018, VOL- 5/44

बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

मधु उपाध्याय, Ph. D.

प्राचार्य, महात्मा गाँधी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बांसवाड़ा (राज.)

drmadhu.upadhyay@gmail.com

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भारतीय संस्कृति में मनुष्य को प्रकृति पुत्र माना जाता है। मनुष्य इस सुन्दर प्रकृति के आंगन में ही बडा होता है । मानव सभ्यता हमेशा ही प्रकृति से तालमेल बिठाकर अपना विकास करती रही है । यह तालमेल हजारों वर्षो तक बना रहा । पीपल व केले के पेड़ की पूजा भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति आदर की सूचक मानी जाती रही है । इतना ही नहीं बरगद, कदम्ब, पीपल, नीम, तुलसी जैसे छायादार एवं औषधि तुल्य वृक्षों को धार्मिक भावनाओं से जोड़कर इनकी सुरक्षा की भावना जागृत की गई । नदियों को माता की संज्ञा दी गई ।

मात्र वृक्ष और जल ही नहीं अपितु गाय, बैल आदि जानवरों को पूज्य बनाकर इनकी हत्या पर रोक लगाई गई । पर्यावरण और मानव संस्कृति में गहरा सम्बन्ध है । मानव व प्रकृति के अटूट सम्बन्धों पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि, मानव सभ्यता का विकास ही पर्यावरण के प्रति जागरूकता के कारण हुआ ।

प्रकृति के अपने नियम होते हैं । मनुष्य यदि इन प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करता है तो मनुष्य ही नहीं बल्कि समस्त जीव एवं सृष्टि के लिये हानिकारक परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं ।

19वी शताब्दी के बाद मानव मन में अपने विकास की असाधारण लालसा पनपी जिसके फलस्वरूप तीव्र औद्योगिकीकरण वनों की अन्धाधुंध कटाई, शहरीकरण, कृषि योग्य भूमि का दुरूपयोग जनसख्या में असाधारण वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनो का अविवेकपूर्ण दोहन आदि अनेकों ऐसे कारण हैं जिससे मानव व प्रकृति के तालमेल में अन्तर आने लगा । यहॉ यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि आने वाला समय पानी के लिये युद्ध जैसी स्थिति बना देगा । आज जल सकंट का कारण मानव द्वारा प्रकृति से खिलवाड़ करने का ही नतीजा है ।

मनुष्य ने अपने आर्थिक विकास, उत्थान तथा विलासिता हेतु प्रकृति का अमानवीय व अविवेकपूर्ण दोहन किया जिसका परिणाम प्राकृतिक असंतुलन के रूप में हमारे सामने है ।

शिक्षक बालक जीवन का आदर्श होता है । एक शिक्षक बालक को चाहे जैसी दिशा दे सकता है । शिक्षक विद्यार्थियों के माध्यम से पर्यावरण को शुद्ध रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है । कहा भी गया है ''प्रवर्न्तिता इन डूव प्रदीपात्'' अर्थात पुस्तकों के निर्जीव माध्यम से नहीं गुरू के सजीव सम्पर्क

से ही ज्ञान की ज्योति से ह्रदय का दीपक ज्योतित हो उठता है । (योगराज, 1999) सिर्फ शिक्षक ही नहीं अपितु माता–पिता भी बच्चे को पर्यावरण से होने वाले लाभ और हानि से विस्तृत रूप से अवगत करा सकते हैं ।

परिवार के बाद समाजीकरण की दूसरी कड़ी के रूप में विद्यालय बालक को प्रशिक्षिक करते हैं ताकि बालक की पर्यावरण के प्रति सामान्य चेतनाको बढाया जा सके और एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में समाज में खड़ा किया जा सके । यदि हम दैनिक कियाकलाप पर ध्यान दे तो पाते हैं कि विद्यालय में पढ़ रहे विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अभाव है । पर्यावरण प्रदूषण के खतरों ने एक ऐसी आवश्यकता उत्पन्न कर दी है जिस पर तुरन्त आक्रमण करना आवश्यक हैं । (गिहार एवं सक्सेना 1999)

आज देश के सभी विद्यालयें में पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता हैं ।

इस हेतु आवश्यक है कि, शिक्षकों में पर्यावरणीय संरक्षण अभिवृत्ति का निर्माण उनके प्रशिक्षण स्तर पर मुख्य रूप से किया जाये । विशेष रूप से उनके प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में निर्धारित मूलभूत उद्देश्यों के संदर्भ में 1 शिक्षक–प्रशिक्षणार्थी अपने प्रशिक्षणकाल में पर्यावरण के प्रति शोध दृष्टि रखते हुये पर्यावरण से संबंधित समस्याओं के प्रति समाधानकर्त्ता के रूप में तैयार हो सकें और भविष्य में विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षक के रूप में निर्मित कर सकें । आज पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण ही यही है कि प्रत्येक स्तर पर शिक्षा के माध्यम से ज्ञानात्मक उद्देश्य की प्राप्ति तो की जा रही है परन्तु ज्ञान के साथ जुडे अभिवृत्ति व कौशल (क्रिया) के प्रति किसी का ध्यान ही नहीं यानि ज्ञान के साथ जुड़े अभिवृति व कौशल (क्रिया) के प्रति किसी का ध्यान ही नहीं यानि व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् पर्यावरण के प्रति संवेदनीशील होकर उसके प्रति प्रयास करता है या नहीं, इसकी कोई व्यवस्था नहीं। अतः जब शिक्षकों में पर्यावरणीय संरक्षण अभिवृति होगी तथा संवेदनशील होगा तो निश्चित रूप से वह अपने व्यवहार व क्रिया द्वारा विद्यार्थियों में इस अभिवृति का निर्माण कर सकेगा ।

अध्ययन का उद्देश्य :–

– बांसवाडा शहर के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में पर्यावरणीय अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

– सामान्य वर्ग व आरक्षित वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

जनसख्ंया :–

शोध में दक्षिणी राजस्थान बांसवाडा जनपद के 150 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को चुना गया ।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि :–

न्यादर्श चयन हेतु बहुस्तरीय न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया । इस प्रक्रिया के अन्तर्गत बांसवाडा शहर के चार शिक्षक – प्रशिक्षण महाविद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा 150 प्रशिक्षणार्थियों को चुना गया ।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चयनित प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृति को जानने के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। लिंगानुसार 75 पुरूष 75 स्त्री प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया ।

उपकरण :–

शोधकर्ती द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया ।

1 पर्यावरणीय शिक्षा तत्व विश्लेषण सूची (बी.एड. पाठ्यक्रमानुसार)

2 पर्यावरणीय शिक्षा अभिवृत्ति मापनी (बी.एड. पाठ्यक्रमानुसार)

उपरोक्त उपकरण शोधकर्ती द्वारा तैया किये गये ।

पर्यावरणीय तत्व विश्लेषक आयाम सूची क्रमशः निर्धारित की गई –

1 मनुष्य एवं जीव मण्डल आयाम

2 पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप एवं क्षेत्र आयाम

3 पर्यावरण शिक्षा की योजना एवं क्रियान्वयन आयाम

4 प्राकृतिक संसाधन संरक्षण आयाम

5 पर्यावरण शिक्षा जागरूकता एक्शन प्रोग्राम आयाम

6 गुणवत्ता जीवन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आयाम ।

7 पर्यावरण शिक्षा जागरूकता मापन ।

विश्वसनीयता –

पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता को 30 प्रशिक्षणार्थियों पर प्रशासित किया गया तथा 20 दिन के अन्तराल के पश्चात् पुनः उसी न्यादर्श पर प्रशासिक किया गया । दोनों प्रशासनों पर प्राप्त अंको के आधार पर सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया । यह सह संबंध अर्थात परीक्षण पुनः परीक्षण विश्वसीनयता गुणांक प्राप्त हुआ ।

सम्पूर्ण पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता के लिये स्पीयरमेन ब्राउन प्रोफेसी सूत्र का प्रयोग किया गया ।

वैधता :–

प्रस्तुत मापनी की वैद्यता ज्ञात करने के लिये रूप वैधता व निर्वचन वैधता निर्धारित की गई ।

पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी फलांकन प्रक्रिया 4 बिन्दु प्रणाली पर किया गया जो कि सकारात्मक एवं नकारात्मक पदों के लिये निर्धारित है ।

उपरोक्त पूर्व परीक्षण (टेस्ट) द्वारा शोधकर्ती को पर्याप्त शुद्धता से प्रश्नावली निर्माण में सहायता मिली ।

दत्त सकंलन :–

शोधकर्ती द्वारा उक्त शोध हेतु दो कारकों की भूमिका का अध्ययन किया गया ।

प्रथम कारक – बी.एड. महाविद्यालयी पर्यावरणीय शिक्षा आयाम सम्बन्धी अध्ययन ।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

द्वितीय कारक – प्रशिक्षणार्थियों की भूमिका यह दत्त सकंलन दो चरणों में किया गया।

प्रथम चरण में पाठ्यक्रम का अध्ययन / विश्लेषण

द्वितीय चरण में प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन ।

निष्कर्ष , सुझाव –

सामान्य वर्ग व आरक्षित वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करने पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये :–

तालिका – 1 सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के मनुष्य एवं जीवन मण्डल आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=98)
सामान्य	50	22.48	1.93	
आरक्षित	50	21.86	2.20	1.49 N.S.

तालिका–1, से परिलक्षित होता है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में मनुष्य एवं जीवमण्डल आयाम पर अधिक अभिवृत्ति स्तर रखते हैं ।

तालिका – 2 सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप एवं क्षेत्र आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=98)
सामान्य	50	24.56	2.57	
आरक्षित	50	24.08	3.33	0.80 N.S.

तालिका–2, इस ओर संकेत करती है कि आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के पर्यावरण शिक्षा के स्वरूप एवं क्षेत्र आयाम पर कम मध्यमान अंक प्राप्त किये ।

तालिका – 3 सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के पर्यावरण शिक्षा की योजना एवं कियान्वयन आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=98)
सामान्य	50	14.78	1.66	
आरक्षित	50	14.52	1.71	0.76 N.S.

तालिका–3, से विदित होता है कि सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी पर्यावरण शिक्षा की योजना एवं क्रियान्वयन आयाम पर समान अभिवृत्ति स्तर रखते हैं ।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका – 4 सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के पर्यावरण शिक्षा के एक्शन प्रोग्राम आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=98)
सामान्य	50	6.14	1.20	
आरक्षित	50	5.76	1.19	1.58 N.S.

तालिका–4, के परिणाम बताते है कि ऐक्शन प्रोग्राम आयाम पर सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक मध्यमान प्राप्त दिये । इससे निष्कर्ष निकलते है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में पर्यावरण शिक्षा के ऐक्शन प्रोग्राम तुलना आयाम पर अधिक अभिवृत्ति स्तर रखते हैं ।

तालिका – 5 सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=98)
सामान्य	50	35.34	4.06	
आरक्षित	50	37.08	2.73	2.51 N.S.*

* Significant at 0.05 level of significance

तालिका–5 के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण आयाम पर 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर पाया गया है । ऐसा इसलिए हो सकता है कि बांसवाडा जिले के अधिकांश आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी जगंलो के आस–पास निवास करते है इसलिए वे प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण के लिए अधिक अभिवृत्ति स्तर रखते हैं ।

तालिका – 6 सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा जागरूकता मापनी के गुणवत्ता जीवन के लिए अन्तराष्ट्रीय सहयोग आयाम पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=98)
सामान्य	50	25.38	3.02	
आरक्षित	50	24.08	3.33	2.03

तालिका–6, से यह निष्कर्ष निकलता है कि सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी गुणवत्ता जीवन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आयाम पर एक दूसरे के मध्य अभिवृत्ति स्तर पर अन्तर रखते हैं । तालिका–6 से यह भी विदित होताहै कि सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में उपरोक्त आयाम पर अधिक मध्यमान अंक प्राप्त किये । ऐसा इसलिए सम्भव है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी निरन्तर मीडिया के सम्पर्क में रहते हैं ।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका – 7 सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी पर मध्यमान, मानक विचलन तथा टी मान

Gender	N	Mean	SD	t-value (df=98)
सामान्य	50	98.90	5.57	
आरक्षित	50	95.80	8.62	2.13 *

* Significant .05 level of significance

तालिका–7, के निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी पर सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी एक दूसरे के मध्य अपने अभिवृत्ति स्तर पर अन्तर रखते हैं । तालिका–7 से यह निष्कर्ष निकलता है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी पर्यावरण शिक्षा के प्रति आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक अभिवृत्ति स्तर रखते हैं ।

सामान्य व आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरणीय शिक्षा अभिवृत्ति मापनी के सात आयामों से संबंधित निष्कर्ष निम्नवत रहे ।

– तालिका एक, दो, तीन, चार, पॉच एवं छः संबंधी आयामों पर प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत हैं :–

– जीवमण्डल आयाम पर सामान्य वर्ग का अधिक परिमापांक अभी भी ग्रामीण व आरक्षित वर्ग की शिक्षा संबंधी प्रयासों की कमी को दर्शाता हैं ।

– तालिका 2 पर पर्यावरण के नजदीक होने पर भी आरक्षित वर्ग का अपेक्षाकृत कम परिमापाकं पुनः उपरोक्त कारण हो सकता हैं ।

– तालिका 4 के परिणाम पुनः सामान्य वर्ग के अधिक परिमापांक प्रदर्शित करता है।

– तालिका 5 जो प्राकृतिक संसाधन संरक्षण आयाम से संबंधित है वहॉ अनारक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर पाया है । ऐसा इसलिए हो सकता है कि इनमें से अधिकांश प्रशिक्षणार्थियों जगंलो का आस–पास निवास करते हैं।

– तालिका 6 के परिणाम सामान्य प्रशिक्षणार्थियों के अपेक्षाकृत अधिक परिमापांक प्रदर्शित करते है । इसका कारण सामान्य वर्ग का अपेक्षाकृत मिडिया से सम्पर्क की निरन्तरता व अधिकता हो सकती है ।

– तालिका 8 के परिणाम पर्यावरण शिक्षाके प्रति सामान्य वर्ग प्रशिक्षणार्थियों की अधिक अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं, अतः पर्यावरण शिक्षा के प्रति आरक्षित वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षाार्थियों की तुलना में सामान्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों का अभिवृत्ति स्तर उच्च रहा।

उपसंहार एवं शैक्षिक निहितार्थ :–

बांसवाडा आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में विशेषकर शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया यह शोध उनके प्रकृति के करीब रहने समझने और संरक्षण की सोच को जानने के उद्देश्य से किया गया । उन्हें पर्यावरण, प्रकृति व राष्ट्रीय / अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संबंधी योजनाओं की कितनी जानकारी है और उनके अनभिज्ञ क्षेत्रों को जानने के प्रयास हेतु किया गया ।

इन शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी जब जागृत हो जायेगें तो समाज भी पर्यावरण के प्रति संवेदनशील व जागृत हो जायेगा ।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies